विद्या आश्रम, सारनाथ पर
जगदीश सिंह यादव की जयंती मनाई गई
गुरूवार, 18 जुलाई 2024

-आचार्य लक्ष्मण प्रसाद

विद्या आश्रम सारनाथ में 18 जुलाई दिन बृहस्पतिवार को किसान नेता जगदीश सिंह यादव की जयंती मनाई गई। जगदीश भाई विद्या आश्रम के न्यास सदस्य भी थे और लोकविद्या आन्दोलन के प्रखर विचारक और समर्थक थे। विद्या आश्रम के अध्यक्ष श्री सुनील सहस्रबुद्धे, वाराणसी में नही थे, लेकिन इस जयंती समारोह में उन्होंने अपने लिखित सन्देश भेजा जिसे पढ़कर सुनाया गया और इसकी प्रतियाँ बनाकर सभी को दी गई। यह संदेश संलग्न है.

जयंती समारोह में चंदौली, वाराणसी, आजमगढ़ और मऊ जिले से लोग शामिल हुए। सर्वप्रथम किसान नेता जगदीश सिंह यादव के चित्र पर पुष्प अर्पित किया गया, इसके पश्चात जयंती का कार्यक्रम जितेंद्र प्रताप तिवारी मंडल अध्यक्ष वाराणसी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। संचालन का कार्य रामौतार सिंह ने किया। उन्होंने जगदीश जी के जीवन के बारे में विस्तार से विषय प्रवेश कराया।

चंदौली से प्रेम नारायण मौर्य ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि हम लोगों के गांव में रहने वाले जगदीश जी किसानों के नेता थे। चंदौली में पानी बिजली के सवाल को लेकर वे आंदोलन का नेतृत्व करते थे। हम लोगों ने उन्हीं से आंदोलन के बारे में बहुत कुछ जाना और सीखा। उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। वाराणसी भारतीय किसान यूनियन जिला महासचिव कमलेश कुमार राजभर ने कहा कि जगदीश सिंह यादव किसानों के मसीहा थे। किसान हित के लिए लगातार सक्रिय रहते थे। बनारस में सारनाथ, सथवां, डोमरी, करसडा इत्यादि जगहों के आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी थी। जयंती के अवसर पर हम उन्हें सादर नमन करते हैं। चंदौली से रामाश्रय प्रजापति ने जगदीश सिंह यादव पर जीवन गाथा के गीत प्रस्तुत किये। इन गीतों में भारतीय किसान यूनियन किस प्रकार से वाराणसी मंडल में श्यामा प्रसाद सिंह और जगदीश भाई के मार्फत फैला इन सब बातों का बृहद समावेश था। उनके गीतों में विभिन्न आंदोलनों में घटित घटनाओं का भी उल्लेख था। चंदौली से मनोज कुमार यादव ने अपनी बात रखते हुए बताया कि हम लोग जगदीश जी के साथ हर कार्यक्रम में रहते थे, आंदोलन में आते जाते थे, आज जयंती के अवसर पर हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और बार-बार नमन करते हैं। ऐसे किसान योद्धा की हमें जरूरत है।

वाराणसी से लक्ष्मण प्रसाद मौर्य ने जगदीश सिंह यादव के साथ बीते विभिन्न जनसभाओं, पंचायतों, यात्राओं, संघर्षों इत्यादि की स्मृतियां प्रस्तुत की। हर साल जून के महीने में सिगरा पर स्थित सिंचाई विभाग में मुख्य अभियंता सोन से मुलाकात करके नहरों, नलकूपों इत्यादि की व्यवस्था दुरुस्त करने संबंधी वार्ता होती थी। इन सभी कार्यों में जगदीश जी बहुत ही सक्षमता पूर्वक किसानों का पक्ष प्रस्तुत करते थे। किसी से डरते नहीं थे, लगातार चिंतन मनन करने वाले परम ईमानदार और किसान, मजदूर, कारीगर,आदिवासी, महिलाओं इत्यादि का हित कैसे हो, इस पर सतत् विचार करने वाले जगदीश जी अपने अंदर समृद्ध वैचारिक ताकत रखते थे। स्वार्थ रंच मात्र भी उनके अंदर नहीं था। इसलिए निर्भीकता और सटीक सोच सहज रूप से उनके अंदर प्रवाहित होती रहती थी। पंचायत में उनका अटूट विश्वास था। किसी भी समस्या का समाधान आपसी समन्वय के मार्फत पंचायत में करने के पक्षधर थे। इसी विचारधारा पर आधारित वाराणसी में एक कार्यक्रम वार्ड ज्ञान पंचायत चलाया जा रहा है, अलग-अलग कार्यों को करने वाले, तथा वार्ड के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले लोगों की एक प्रतिनिधिज्ञान-पंचायत हो और उस ज्ञान-पंचायत के द्वारा वार्ड से संबंधित समस्याओं के हल, संसाधनों के नवीनीकरण इत्यादि पर चर्चा हो तथा स्थानीय ज्ञान और ज्ञानियों के द्वारा समाधान के प्रयास हों, उनके ज्ञान की नीति निर्धारण एवं क्रियान्वयन भी सक्रिय भागीदारी कैसे हों आदि मुद्दे इस वार्ड ज्ञान पंचायत के सामने होंगे.

चंदौली से वाराणसी मंडल अध्यक्ष जितेंद्र प्रताप तिवारी ने अपनी बात रखते हुए कहा की जगदीश सिंह यादव के साथ में लंबे समय तक रहा। उनके साथ हंसी मजाक भी होती रहती थी। वह हर कार्यक्रम में हम लोगों को वैचारिक खुराक देते रहते थे। भोपौली पंप कैनाल पर पानी के सवाल और बिजली के सवाल पर संघर्ष

छिड़ा रहता था, उसमें मेरी भागीदारी होती थी। भोपौली में आज जो पक्का पंप कैनाल बन गया है तत्कालीन विधायक प्रभु नारायण यादव उसे अपने क्षेत्र में ले जाना चाहते थे। लेकिन जगदीश सिंह यादव ने देखा कि यदि पहले से ही भोपौली में जमीन का अधिग्रहण पंप कैनाल के लिए किया गया है, अगर दूसरी जगह पंप कैनाल लगेगा तो वहां भी किसानों से जमीन छीनी जाएगी इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि पंप कैनाल को कहीं और नहीं जाने दिया जाएगा। उनके प्रबल विरोध और संघर्ष के कारण पक्का पंप कैनाल का निर्माण भूपौली में ही हुआ।

वाराणसी से राम जनम यादव ने अपनी बात रखते हुए कहा कि जगदीश सिंह यादव से मैं जिला जेल में मिला हूं। वहां पर उनके साथ अरुण जी भी बंद थे, उन दोनों लोगों से मैं मिलने गया था। जगदीश जी जिस आंदोलन को चंदौली बनारस इत्यादि जगहों पर लड़े, वहां समाजवाद का विचार पहले से ही लोगों के अंदर चल रहा था। डॉक्टर लोहिया चंदौली लोकसभा से चुनाव भी लड़ चुके थे। यह एक परिवर्तन की स्थल रही है। यहां पर किसान, मजदूर, कारीगर इत्यादि के अंदर राजनीतिक चेतना ज्यादा विकसित रही है। इस कारण जगदीश जी का संघर्ष इस क्षेत्र में ज्यादा सफल रहा। जगदीश जी पंचायत में विश्वास रखते थे। इसे हम पंचायत कह रहे हैं गांधी जी ने इसको कभी स्वराज कहा था इसके और भी नाम हो सकते हैं।आज इन सब विचारों के आधार पर हम लोग वाराणसी में वार्ड ज्ञान पंचायत चला रहे हैं।

श्रीमती प्रेमलता सिंह ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं जगदीश सिंह यादव से कार्यक्रमों में कई बार मिली हूं, उनका विचार सुनी हूं, किसान हित में सोचने वाले व्यक्ति थे। हमें उनके रास्ते पर चलने की जरूरत है। उन्होंने श्री सुनील सहस्रबुद्धे द्वारा लिखे गए एक संदेश को पढ़कर सुनाया। बनारस से पारमिता जी ने अपना विचार रखते हुए कहा कि जगदीश सिंह यादव को मैं काफी पहले से जानती हूं। जब मैं बीए में पढ़ रही थी उस समय सर्व सेवा संघ में कार्यक्रमों में आते थे, किसान हित की बात करते थे, आंदोलन की बात करते थे। उन्होंने चंदौली वाराणसी के किसानों को सही दिशा दिया। ऐसे किसान नेता को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। उनके द्वारा बनाया गया संगठन और मजबूत बने बिना किसानों का कोई सुनने वाला नहीं है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुरेश यादव, राष्ट्रीय सचिव(भारतीय किसान यूनियन) ने कहा कि जगदीश भाई विचार के धनी थे। चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत के विचार पूरी तरह से उनके अंदर उतर चुका था। वाराणसी मंडल में वह टिकैत के प्रति मूर्ति थे। उनकी ताकत चिंतन मनन और विचार की ताकत थी। आज हम लोग उनको इसलिए याद करते हैं क्योंकि उन्होंने यहां के किसानों को एक सफल नेतृत्व प्रदान किया। दिल्ली के बॉर्डर पर 13 महीने तक तीन काले कानून के विरोध में आंदोलन चल ,वह आंदोलन सफल इसलिए रहा क्योंकि उस आंदोलन के साथ चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत, जगदीश सिंह यादव जैसे तमाम महान विभूतियों की आत्मा थी। पूरी दुनिया से उसे आंदोलन को समर्थन मिला । दुनिया के कई देशों के असेंबलियों और पार्लियामेंट में इस किसान आंदोलन पर काफी चर्चा हुई। जगदीश सिंह यादव को हम सच्ची श्रद्धांजलि तभी दे सकते हैं जब हम उनकी प्रेरणा, उनके विचार पर आधारित संगठन को इस क्षेत्र में मजबूती के साथ खड़ा कर दें।

कार्यक्रम में सुरेश यादव, मिथिलेश यादव और परमिता जी को गमछा देकर सम्मानित किया गया।

सुनील सहस्रबुद्धे का सन्देश

जगदीश सिंह यादव जयंती समारोह
18 जुलाई 2024
विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

किसान आन्दोलन के नेता जगदीश सिंह यादव की स्मृति में
सुनील सहस्रबुद्धे, अध्यक्ष विद्या आश्रम और किसान आन्दोलन के आदि साथी

इस वर्ष जगदीश भाई की जयंती का समारोह विद्या आश्रम पर मनाया जा रहा है यह विद्या आश्रम के लिए गौरव की बात है.
जगदीश भाई को याद करना एक पुण्य कार्य है. उनके चले जाने से किसान आन्दोलन को अपूरणीय क्षति हुई है, जो लगभग दस-बारह साल बाद आज भी महसूस की जाती है. किसान आन्दोलन में किसानों के बीच में वे नेता पैदा हुए जिन्होंने किसानों के हित और किसानों के दर्द की संयुक्त भूमि पर ऐसे विचारों को पेश किया जो भारत देश को उस मुकाम तक ले जा सकते हैं, जहाँ किसान तो खुशहाल होगा ही तथा साथ में सारे गरीब वर्गों के लिए एक उज्जवल भविष्य वास्तविक बन जायेगा. चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में किसान आन्दोलन ने समाज में एक 'अराजनीतिक ताकत' की कल्पना की और उसे साकार करने की ओर कदम आगे बढ़ाए. ऐसी ताकत के निर्माण में जगदीश भाई ने अग्रणी भूमिका निभाई और इसके साथ पूरे आन्दोलन में अपनी पहचान बनाई.

हमें वह दिन याद आता है जब हरिद्वार की राष्ट्रीय महापंचायत में लालकोठी पर हो रही कार्यकारिणी की व्यापक बैठक में महात्मा टिकैत ने अराजनीतिकता के सवाल पर चर्चा करते हुए अचानक जगदीश भाई की ओर देखा और कहा "हाँ भाई, बनारस वालों, बोलो, इस पर तुम्हारी क्या राय है?"

बनारस और चंदौली में किये गए किसान संघर्षों से यहाँ के लोग तो परिचित ही हैं. किस तरह हर बार चाहे सथवां में, बहोरचंडील में या भुपौली में या और कई स्थानों पर प्रशासनिक अधिकारियों को धरना स्थल पर आना पड़ता रहा और भरी पंचायत में एक खुली वार्ता के मार्फ़त प्रशासन को अपने निर्णय घोषित करने होते थे. जगदीश जी के नेतृत्व में सच्चाई, ईमानदारी और किसानों के प्रति निष्ठा के मूल्य सर्वोपरि रहते थे तथा किन्हीं भी परिस्थितियों में इनसे विचलित नहीं हुआ गया. अपने इलाके के किसानों में उन्होंने एक नया आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जागृत किया.

जगदीश भाई विद्या आश्रम न्यास के सदस्य रहे और इसके निर्माण में उन्होंने अहम् भूमिका निभाई. यहाँ उनका बराबर आना-जाना बना रहा. यह बहुत अच्छी बात है कि चंदौली का किसान यूनियन का नेतृत्व आज भी पूरी ईमानदारी से उनके बताये रास्ते पर चलने की कोशिश करता है.

अंत में, मैं अपनी ओर से, आश्रम की ओर से और राष्ट्रीय किसान आन्दोलन की ओर से जगदीश भाई की स्मृति को प्रणाम करता हूँ और जिस आन्दोलन में उन्होंने अपना सब कुछ लगा दिया उसके लिए एक उज्जवल और शक्ति संपन्न भविष्य की कामना करता हूँ.